International Journal of Arts, Humanities and Social Studies
www.socialstudiesjournal.com
Online ISSN: 2664-8660, Print ISSN: 2664-8652
Received: 12-07-2022, Accepted: 30-07-2022, Published: 07-08-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 13-14

शेखावटी में रागमाला चित्रण

पंचम खण्डेलवाल
सहायक आचार्य (विद्या संबल), राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.33545/26648652.2022.v4.i2a.51

सारांश
कला सौन्दर्य के सम्बन्ध में विश्व कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है – ''जो सत् है, जो सुन्दर है, वही कला है। सृष्टि में चारों ओर एक चिर सौन्दर्य परिलक्षित हो रहा है, एक चिरन्तन सत्य का आभास मिल रहा है, इसी का व्यक्तिकरण, इसी को कल्पना के उन्मुक्त पंखो द्वारा चारों और प्रकट कर देना ही कला है''।
कला स्वयं सौन्दर्य की प्रेरणा से प्रकट होती है। कलाकार के भीतर अस्फुट रूप से विद्यमान सौन्दर्यभास ही मूर्त होकर कलागत सौन्दर्य कहलाता है।
अर्थात सभी कलाओं का मूल सौन्दर्य, भाव और रस है। कलाकार के अनुसार माध्यम बदल जाता है। संगीत स्वर के माध्यम से सौन्दर्य, रस और भावाभिव्यक्ति करता है। कविता शब्दों के माध्यम से यह अभिव्यक्ति करती है तो चित्रकार इसी अभिव्यक्ति के लिए रंग–रेखाओं को माध्यम बनाता है।
संगीत और कविता श्रव्य और चित्र दृश्य कला है। श्रव्य को दृश्य करने का प्रयास रागमाला चित्रों में हुआ है। जहाँ शब्द रूक जाते हैं चित्र कि भाषा वहीं से प्रारम्भ हो जाती है। दोनों का उद्देश्य – अभिव्यक्ति रहा है।

कूट शब्दः चित्त–रंजक, वाचक, उद्गम, रंजरागे, आस्वाद, सौन्दर्यभास, चिरन्तन, भावाभिव्यक्ति, उद्वेलित

प्रस्तावना
काव्य में जहाँ 'राग' शब्द का अर्थ 'प्रीति', 'अनुराग' आदि से होता है वहीं संगीत में राग से तात्पर्य ''स्वरों की विशिष्ट रचना'' से है, जिसके द्वारा विभिन्न रसों के विशिष्ट भावों का प्रकाशन किया जाता है।
संगीत के क्षेत्र में जिस–चित्त–रंजक –ध्वनि की प्रतिष्ठा है, उस ध्वनि विशेष के वाचक 'राग' शब्द का उद्गम 'रंज्' धातु से हुआ है। पाणिनीय व्याकरण में दो स्थलों पर 'रंजरागे' रंगने के अर्थ में 'रंज्' धातु से प्रयोग बताया गया। इसी रंज् धातु में धञ् प्रत्यय जुड़कर 'राग' संज्ञा बनता है जिसका अर्थ रंग है। संगीत का राग हमें अपने रंग में रंग लेता है। प्रेमी और प्रेमास्पद का 'राग' या 'अनुराग' भी यही कार्य करता है।

रागों का चित्रण
कला सौन्दर्य–विधान सबसे पहले कलाकार के हृदय में होता है, वह बाह्य सौन्दर्य से अनुभूत होता है, तत्पश्चात् संरचना की भूमिका से उसी सौन्दर्य आस्वादक के हृदय में प्रवेश पाता है। अतः कला सौन्दर्य बाह्यजगत से उठकर कलाकार के मानस से होते हुए आस्वादक के मानस तक प्रवेश पाता है और कुल मिलाकर यहाँ से वहाँ तक अपना एक क्षेत्र निरूपित करता है जिसमें उसकी एक अखण्ड सत्ता होती है।
संगीत में राग रागिनियों का स्वरूप मध्यकाल में ही निश्चित हो पाया। अतः इससे पूर्व राग माला चित्रों के निर्माण की कल्पना नहीं की जा सकती।
रागमाला चित्रों के सम्बन्ध में कई भ्रान्तियाँ है। कई बार स्वयं संगीतकार किसी चित्र में प्रयुक्त प्रतीकों को गलत मानते हैं। एक ही राग अलग–अलग शैली में अलग–अलग प्रतीकों द्वारा भी चित्रित हुआ है। शैलीगत विभिन्नता को तो स्थानीय प्रभाव के कारण स्वीकारा जा सकता है पर प्रतीकों का परिवर्तन तो उस राग रागिनी विशेष का स्वरूप ही बदल देगा। अतः निश्चित रूप से यह गलत है।
इसका कारण जानने का प्रयास किया जाये तो अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि संगीत व कला के क्षेत्र भिन्न–भिन्न है। संगीत शास्त्र की स्थापना करने वाले मनीषि संगीतकार रहे हैं पर चित्र निर्माण करने का कार्य चित्रकारों का था। चित्रकार के सामने आधार पहले से ही निश्चित था उसका काम उन आधारों पर संयोजन तैयार करना था जो उसने दक्षता से कर दिया। पर जब प्रतीक आदि ही विभिन्न स्थानों पर अलग–अलग हो तो निश्चित रूप से चित्रकार का इसमें कोई दोष नहीं है।
विभिन्न मतों से राग–रागनियों के अनेक भिन्न–भिन्न वर्गीकरण मिलते हैं।
यद्यपि इन वर्गीकरणों में राग–रागनियों में कुछ अन्तर अवश्य प्रतीत होता है परंतु रागों का पुरूषोचित मर्दानापन और वीरता तथा रागिनियों में स्त्रियोंचित कोमलता, मार्दवता इत्यादि आरोपित की गई है इससे इनका सौन्दर्य वृद्धिगत हुआ है। एक कुटुम्ब का आभास हमें इन वर्गीकरण में मिलता है। शायद इसी कारण से इन्ही राग–रागिनियों की रागमाला बनाई गई। मुख्यतः प्रमुख राग छः प्रकार के है जो छः मौसमों का प्रतिनिधित्व करते है। इन प्रमुख रागों की पाँच–पाँच स्त्रियाँ हैं (जो निम्न रागों का प्रतिनिधित्व करती हैं) अतएव रागिनियों की कुल संख्या तीस है। इसके अलावा कुछ अन्य लघु राग है जिन्हें उन रागों का पुत्र कहा जाता है। चित्रों का मूल उद्देश्य वातावरण व भावनाओं के अनुरूप लिया जाता था, जो

उस राग या रागिनी द्वारा उद्वेलित किया जाता था। उदाहरणार्थ प्रेम भावना का राधा कृष्ण के चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया जाना। अतः कई बार राधा व कृष्ण को नायक व नायिका के रूप में भी वर्णित किया जाता है।

भारत के मतानुसार राग का वर्गीकरण

राग रागिनी

भैरव– 1. मधुमाधवी, 2. ललिता, 3. बरारी, 4. भैरवी, 5. बहुली
मालकौंस– 1. गुजरी, 2. विधावती, 3. तोड़ी, 4. खम्भावती, 5. कुकुभ
हिंडोल– 1. रामकली, 2. मालवी, 3. आसावरी, 4. देवारी, 5. केकी
दीपक– 1. केदारी, 2. गौरा, 3. रूद्रावती, 4. कामोद, 5. गुर्जरी
श्री– 1. सैन्धवी, 2. काफी, 3. ढुमरी, 4. विचित्रया, 5. सोहनी
मेघ– 1. मल्लारी, 2. सारंगा, 3. देशी, 4. रतिवल्लभा, 5. कानरा

शेखावटी में प्राप्त भित्ती चित्रों के आधार पर रागमाला के राग–रागिनियों का वर्णन इस प्रकार है

राग		
राग मेघ	:	नायिका आसन पर बैठी है, नायक सितार बजाकर गीत गा रहा है। आकाश में वर्षा की झड़ी लगी हुई है तथा पास में एक पक्षी चित्रित है नायिका संगीत का आनन्द ले रही है।
राग दीपक	:	नायक–नायिका आसन पर आलिंगनबद्ध होकर बैठे है। दो दासियाँ चामर ढुला रही है तथा संगीतकार सितार बजा रहे हैं। नायक–नायिका के दोनों और दीपक जल रहे हैं।
श्राग हिण्डोला	:	नायक फूल लिये खड़ा है। पीछे तीन दासियाँ पंखा व चामर ढुला रही है। सामने नायक तबला बजा रहा है।
राग भैरव	:	शिव–पार्वती आसन पर बैठे है तथा पीछे दासियाँ पंखा चामर ढुला रही है। सामने नायक तबला बजा रहा है।
राज श्री	:	राजा–रानी क सम्मुख संगीत प्रस्तुत करता हुआ सितार–वादक एवं ढोलक मंजीरे लिय अन्य साजिन्दे, दासियाँ आदि।
रागिनी		
रागिनी धनसेरी	:	नायिका आसन पर बैठी तबला बजा रही है तथा सामने नायक सितार बजा रहा है। जिसके आगे दासी फूल लिये खड़ी है। नायिका के पीछे दासी पंखा झल रही है। पेड़ों की डाल पर तोते बैठे दिखाये गये है। नायिका आसन पर बैठी सारंगी बजा रही है तथा पास में दो हिरण खड़े संगीत से आकर्षित हो रहे है।

श्रागिनी आसावरी	:	पानी के पास उठी पहाड़ी पर नायिका बीन बजा रही है। चित्र के बांयी ओर सांप है तथा दायीं और हिरण चित्रित किया गया है।
रागिनी भावना / रागिनी गावता		
	:	संगीत लय पर मुग्ध होकर नायिका, दासी का सहारा लेकर छत से उतर रही है। नायिका के हाथ में छत्र है। पास में तानपुरा बजाता नायक। भवन के द्वार पर द्वारपाल बैठा है। (इस प्रकार की कोई राग नहीं है)
रागिनी कुकुभ	:	नायिका दोनों हाथों से मयूरों को दाना दे रही है।
रागिनी प्रभात	:	चित्र में नायिका वस्त्र धारण कर रही है तथा निकट एक नायिका अपने लहंगे को पकड़कर नृत्य के लिये उत्सुक दिखाई देती है। चित्र के बांयी ओर संगीतज्ञ तानपुरा लिये खड़ा है।
रागिनी गुलकली	:	नायिका आसन पर बैठी हुई है तथा संगीतज्ञ को मदिरा दे रही है।
रागिनी पूरवा	:	नायिका पलंग पर शयन कर रही है तथा दो दासियाँ चामर ढुला रही है। संगीतज्ञ ढोलक बजा रहा है।
रागिनी जलगी	:	नायिका आसन पर बैठी सितार बजा रही है तथा दासी मंजीरे बजा रही है। नायक पेड़ पर बैठा सारंगी बजा रहा है तथा पक्षी चहक रहे हैं। (इस प्रकार की कोई राग शास्त्रीय रागों में नहीं है।)

राग जेजेवन्ती : नायक–नायिका आसन पर बैठे है तथा नायक का हाथ नायिका के कंधे पर है। एक दासी चंवर ढुला रही है तथा दो दासियाँ वाद्ययंत्र बजा रही है।

इन राग–रागिनी के चित्रों को देखने से ज्ञात होता है कि उस समय शेखावटी में पर्याप्त शास्त्रीय रागों का विकास नहीं हुआ था। जो संगीतज्ञ थोड़ा बहुत जानते थे उन्होंने अपने मन से वही राग बना डाली तथा चित्रकारों को बतायी जिसके फलस्वरूप चित्रकारों ने जैसा चाहा वैसा राग–रागिनी का चित्र बना दिया। इस तथ्य का एक प्रमाण यह भी है कि रामगढ़ की छतरियों में एक ही राग का अलग–अलग रूप में चित्रण हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सं0 कलिका प्रसाद : वृहद् हिन्दी कोष, पृ0 951
2. डा0 विश्वनाथ शुक्ल : राग शब्द व्युत्पत्ति और परिभाषा, संगीत, (1972), पृ0 157
3. कु0 शकुन्तला शर्मा : आधुनिक काव्य में सौन्दर्य भावना, पृ0 19
4. डॉ0 छोटेलाल दीक्षित : तुलसी का सौन्दर्य बोध, पृ0 12
5. डॉ0 सुमहेन्द्र : रागमाला चित्र
6. Gangoli OC. Ragas and Raginis, (VOol. 1)
7. Klaus Ebling. Ragmala, Span, pp. 20-26